हिन्द महासागर के उच्चावच

प्रशांत और अटलांटिक के बाद यह तीसरा बड़ा महासागर है। यह महासागर उत्तर में दक्षिणी एशिया, पश्चिम में अफ्रीका तथा पूर्व में ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण में अंटार्कटिका से घिरा हुआ है, कर्क रेखा इस महासागर का उत्तरी सीमा है।

इस महासागर में अटलांटिक महासागर की अपेक्षा महाद्वीपीय मग्नतट बहुत ही कम है। इसकी औसत गहराई 4000 m है। हिन्द महासागर का अधिकांश भाग गहन सागरीय मैदान है। इस महासागर में गर्तों का अभाव है। केवल जावा के दक्षिण में सुण्डा गर्त है जिसकी गहराई 8152 m है। 8152 M

हिन्द महासागर के नितल पर अनेक जलमग्न कटक अथवा पर्वत श्रेणी हैं। मुख्य कटक कुमारी अंतरीप से लेकर अंटार्कटिका महाद्वीप तक विस्तृत है। यह हिन्द महासागर के मध्य में स्थित है। यह कटक हिन्द महासागर को दो प्रमुख बेसिनों में बाँटता है। यह उत्तर में लक्षद्वीप, चैगोस, मध्य में सेंट पॉल कटक तथा दक्षिण में एम्स्टर्डम सेंट पॉल पठार के नाम से जाना जाता है। इसकी कुछ शाखाएँ भी हैं जिसमें मेडागास्कर के दक्षिण ~~प्रिंस~~ मेडागास्कर कटक, प्रिंस एडवर्ड क्रोजेट कटक, सिशेल्स के समीप सिशेल्स कटक तथा अरब सागर में कार्ल्सबर्ग कटक प्रमुख है। 90° पूर्वी देशांतर के सहारे बंगाल की खाड़ी में 90° पूर्वी कटक का विस्तार है। यहीं अंडमान निकोबार कटक भी पाया जाता है। एम्स्टर्डम सेंट पॉल एम्स्टर्डम के पश्चिमी शाखा को कारगुलेन गाउसबर्ग कटक के नाम से भी जाना जाता है जबकि पूर्वी विस्तार को हिन्द अंटार्कटिक कटक के नाम से जाना जाता है।

कारगुलेन गाउसबर्ग

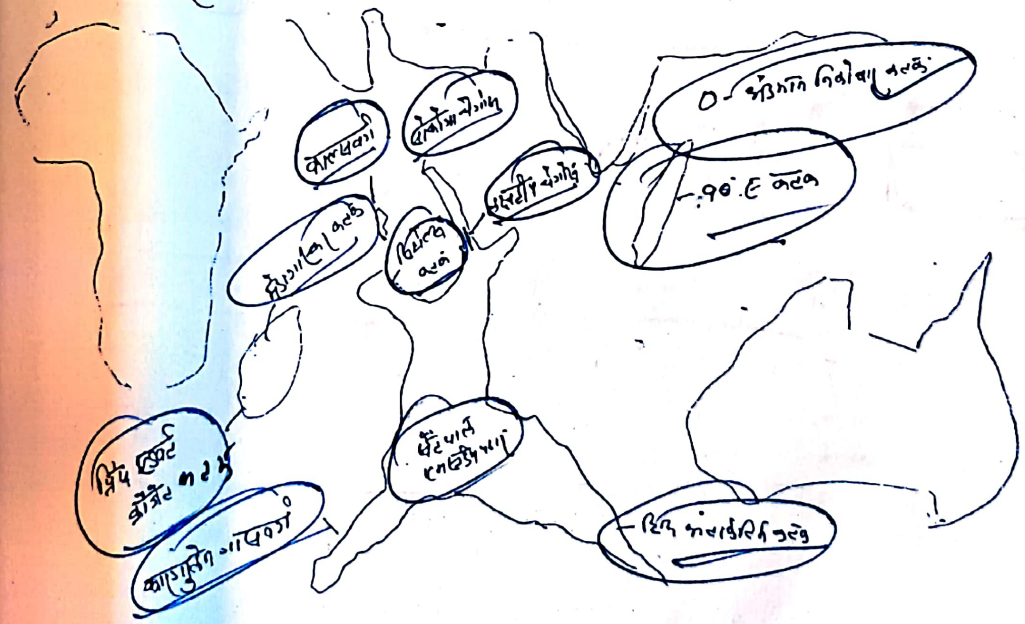

ऑनयन फ्लीट्स ने हिन्द महासागर को प्रादेशिक आधार पर तीन बड़े भागों में बाँटा है -

(A) पश्चिमी भाग - यह अफ्रीका के समीप से विस्तृत है और इसकी गहराई 4000 m केंद्र से कम है। यह कई द्वीपों से युक्त है।

(B) पूर्वी भाग - यह अत्यधिक गहरा है। महाद्वीपीय तट सकरे और तीव्र ढाल वाले हैं।

(C) मध्यवर्ती भाग - हिन्द महासागर का यह भाग कटक के रूप में है। इसी के सहारे कई द्वीपों का भी विकास हुआ है।

जहाँ तक मग्न तट का प्रश्न है, हिन्द महासागर के मग्न तट में विविधता पाई जाती है। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के जहाँ चौड़े मग्न तट पाये जाते हैं, अफ्रीका के पूर्वी तट में भी मग्न तट की चौड़ाई अधिक है। इसकी अधिकतम चौड़ाई मालागासी के समीप है। पश्चिमी भाग की अपेक्षा पूर्वी तट के मग्न तट अधिक सकरे हैं। यह तट मोड़दार पर्वतों से युक्त है। ये इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा के तट के पास मग्न तट की चौड़ाई 160 km से भी कम रह जाती है। अंटार्कटिका के [illegible] की स्थिति है।

कोकोस कीलिंग बेसिन

मध्यवर्ती कटक हिन्द महासागर को पूर्वी तथा पश्चिमी दो प्रमुख बेसिनों में विभाजित कर देती है। इसकी उपशाखाएँ इन बेसिनों को कई छोटे-छोटे उप बेसिनों में विभाजित करती हैं, ओमान बेसिन, अरेबियन बेसिन, सोमाली बेसिन, मॉरीशस बेसिन, नेटाल बेसिन, अगुलहास बेसिन, कोकोस कीलिंग बेसिन (इसे ऑस्ट्रेलिया बेसिन भी कहते हैं।) अंडमान बेसिन प्रमुख बेसिन हैं। इन बेसिनों में कोकोस कीलिंग का विस्तार सर्वाधिक है। दक्षिण में अंटार्कटिका बेसिन की स्थिति है।

हिन्द महासागर के निकटवर्ती पठारी तट अधिकांशतः तीव्र ढाल वाले और कम कटे छटे हैं। (विश्व संदर्भ में) अतः तटीय समुद्र (Costal sea) कम पाये जाते हैं। ऐसे तटीय समुद्रों में लाल सागर और फारस की खाड़ी प्रमुख हैं। लाल सागर ~~अफ्रीका और~~ अफ्रीका और अरब प्रायद्वीप को अफ्रीका के बीच एक भ्रंश घाटी का द्योतक है जबकि फारस की खाड़ी एक छिछला बेसिन है जो ओमान प्रायद्वीप के कारण ओमान की खाड़ी और हिन्द महासागर से लगभग अलग हो गई है।

अरब सागर और बंगाल की खाड़ी हिन्द महासागर की ही भुजाएँ (शाखाएँ) हैं।

जहाँ कहीं भी महासागर में फैले कटक समुद्रतल से ऊपर आ गये हैं वहाँ द्वीपों की रचना हुई है। हिन्द महासागर के द्वीप महाद्वीपों के किनारे तथा मध्य महासागरीय कटक के सहारे विकसित हुए हैं। मध्यवर्ती कटक के सहारे उत्तर से दक्षिण क्रम के द्वीपों में लक्षद्वीप, मालदीव, चागोस, न्यू एम्स्टर्डम, सेंट पाल, कारगुलेन प्रमुख हैं। कटक के शाखाओं पर विकसित द्वीपों में सिसेल्स तथा प्रिंस एडवर्ड द्वीप प्रमुख हैं। महाद्वीपीय द्वीपों में (महाद्वीप का भाग वाले द्वीप) अंडमान निकोबार द्वीप समूह, श्रीलंका, मेडागास्कर, जंजीबार और सोकोत्रा प्रमुख हैं। मॉरीशस और री यूनियन जैसे द्वीप ज्वालामुखी शंकुओं से निर्मित हैं। मध्यवर्ती कटक पर स्थित लक्षद्वीप, मालदीव, कारगुलेन, सेंटपाल प्रवाल द्वीप हैं। हिन्द महासागर के पूर्वी भाग में द्वीपों का अभाव है। केवल छोटे द्वीपों के समूह कोकोस द्वीप एवं क्रिसमस द्वीप ही पूर्वी भाग में अपवाद स्वरूप हैं।

हिन्द महासागर के मग्न तट पर कई कैनियनों का भी पता चला है। अरब सागर में सिंधु कैनियन जिसकी गहराई मग्नतट के किनारे पर 50 m है और मुहाने पर बढ़कर 1140 m से भी अधिक हो जाती है। 5200M बंगाल की खाड़ी में गंगा कैनियन इतनी ही गहरी है। म्यानमार के इरावदी नदी के मुहाने पर भी एक कैनियन का पता चला है। हाल में आंध्र प्रदेश में तीन कैनियन को खोजा गया है, जिसका नाम कृष्णा, महादेवन और आंध्र कैनियन है। अफ्रीका और श्रीलंका के मग्नतट के सहारे भी कई (गोदावरी पे.) कैनियनों का पता चला है।

इस प्रकार ऊपर के तथ्यों से स्पष्ट है कि हिन्द महासागर का नितलीय उच्चावच विविधताओं से युक्त है।

बिंदु -

1. परिचय
2. कटक
3. गर्त - खुर्जा
4. बेसिन
5. a द्वीप तटीय समुद्र
6. द्वीप
   1. मध्यवर्ती कटक के सहारे
   2. मध्यवर्ती कटक के शाखाओं के सहारे
   3. महाद्वीपीय द्वीप - श्रीलंका अंडमान
7. कैनियन — सिंधु, इरावदी, गंगा, महादेवन
8. मग्नतट